Tender Heart High School, Sec.33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-14 'एक छोटी-सी बात') भाग -1
(लेखक- रवींद्रनाथ त्यागी)
पुस्तक- नवतरंग-7

सुप्रभात बच्चो!

आज हम पाठ-14 'एक छोटी-सी बात' कक्षा सातवीं की पुस्तक के पृष्ठ-116 पर दिया गया है।

यह एक हास्य प्रसंग है। इस पाठ में बच्चो हम पढ़ेंगे बिजली के बारे में- आज हमारे देश के लगभग हर घर में बिजली है। लेकिन बिजली की आँख-मिचौनी भी चलती रहती है। इसमें एक आदमी किस प्रकार परेशान होता है। आप सब इस पाठ में उन्हीं लोगों के शब्दों में पढ़ेंगे।

इस पाठ लेखक स्वयं बताते हैं कि यह बात बहुत छोटी-सी थी। उन्हें बिजली का बिल जमा कराना था जिसकी अगले दिन आखिरी तारीख थी; यदि आखिरी तारीख से पहले बिल का भुगतान न किया गया तो बिजली कटने का खतरा था।

बिजली कटने से लेखक को बहुत डर लगता था। बिजली गुल होते ही उनके घर का माहौल अजीब-सा हो गया। बिजली जाते ही जब तक लालटेन ढूंढ़ी जाती, तब तक उसकी चिमनी टूट चुकी होती थी। जब तक नई चिमनी निकाली जाती तब तक अँधेरे में इधर-उधर हाथ मारते समय दीवार पर लगी घड़ी नीचे गिर जाती है। घड़ी के गिरने की आवाज़ सुनकर उनकी पत्नी ज़ोर से चिल्लाने लगीं कि सब लोग दूर रहना कहीं घड़ी पर पाँव न पड़ जाए। इसके बाद भी लेखक का पैर घड़ी पर पड़ जाता है। लेखक कहते हैं कि इसके बाद आप जैसे ही स्टूल से फिसलकर गिरते हैं वैसे ही बिजली आ जाती है। इसके बाद आपके घर का हाल कुछ ऐसा हो जाता है, जैसे युद्ध के बाद अवध के नवाब ने बक्सर का मैदान देखा होगा।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

DATE 18.11.24
PAGE No. 2

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-14 'एक कहानी-सी बात')-1

बच्चो! बक्सर का युद्ध 1764 ईसवी में बक्सर नगर के आस पास ईस्ट इंडिया कंपनी और मुगल तथा नवाबों की सेनाओं के बीच लड़ा गया था। लड़ाई में अंग्रेज़ों की की जीत हुई थी।

अब लेखक ने जल्दी से कपड़े पहने और बिजली कटने के डर से, बिजली का बिल भरने दफ़्तर में पहुँचे। दफ़्तर खुला था, एक व्यक्ति फ़र्नीचर साफ़ कर रहा था और माली किस्म का इनसान अर्थात् माली फूल तोड़ रहा था। इन दो प्राणियों के अतिरिक्त दफ़्तर में और कोई नहीं था। तब लेखक ने उनमें से एक व्यक्ति से पूछा, "बाबू लोग कब आएँगे? मुझे बिजली का बिल जमा करना है।" पान चबाते हुए उसने उन्हें गौर से देखा और इसके बाद वह फिर बोला, "यह काम भोला बाबू करते हैं और वे साढ़े ग्यारह बजे तक ज़रूर आ जाते हैं। जब वे नहीं होते हैं तो सारा काम तिवारी जी सँभालते हैं।" लेखक ने खुश होकर पूछा, "तिवारी बाबू कब आते हैं?" तब उसने बताया कि तिवारी जी, भोला बाबू के आकर चले जाने के बाद आते हैं।" लेखक ने थोड़ा परेशान होकर कहा कि दफ़्तर तो दस बजे खुलता है?

लेखक की बात सुनकर वह व्यक्ति बोला, "नाराज़ क्यों होते हो? दफ़्तर तो खुला है। दरवाज़े खुले हैं, खिड़कियाँ खुली हैं, सब-कुछ तो खुला है। अगर कोई चीज़ ग़लती से बंद रह गई हो तो आप बता दीजिए, मैं उसे खोल दूँगा।"

इसके बाद वह फिर से उन फ़र्नीचरनुमा चीज़ों को साफ़ करने लगा। लेखक शांत होकर उस दफ़्तरनुमा इमारत का निरीक्षण करने लगा। इमारत काफ़ी पुरानी लग रही थी। ऐसा लगता था जैसे बारहवीं शताब्दी

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DATE 18.11.24
PAGE No. 3

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-14 'एक छोटी-सी बात')।

के आस-पास कहीं बनी होगी। प्लास्टर उखड़ चुका था, दीवारों में दरार आ गई थी और फ़र्श सीलन से भरा था। पुताई वर्षों से नहीं हुई थी और छत पर जाले लगे थे। कुरसियाँ गिनी-चुनी थीं जिनमें एक या दो को छोड़कर किसी की टाँग टूटी थी तो किसी की कमर! टूटी हुई टाँगों के नीचे, पत्थर के टुकड़े चतुरता से लगाए गए थे ताकि संतुलन बना रहे। दीवार पर एक घड़ी लगी थी जो शायद सत्रहवीं शताब्दी में चलना बंद हो गई थी। यह सब देखते-देखते ग्यारह भी बज गए लेकिन बिजली के दफ़्तर में कोई भी कर्मचारी और अफ़सर नहीं पहुँचा।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहाँ समाप्त करते हैं। इसका शेष भाग हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे।
शेष भाग अगले सप्ताह -----

अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ।

गृहकार्य:-

सब बच्चे पाठ को पुनः पढ़कर समझने का प्रयास करेंगे और पृष्ठ-119 पर लिखे शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner